विश्व न्याय मन्दिर

एक विशाल जनसंख्या–समूह में भक्तिपरक मनोवृत्ति अपना आकार ग्रहण कर रही है। स्त्री–पुरुष की समानता के स्वर और अधिक मुखरित होने लगे हैं। बच्चों की शिक्षा––लड़कों और लड़कियों दोनों की––पर और अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। परिवार के सदस्यों के बीच के अंतर्सम्बंध की प्रकृति, जो कि सदियों पुरानी मान्यताओं द्वारा गढ़ी गई थी, बड़ी तेजी से बदलने लगी है। –रिज़वान 2013

मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 56 अंक 10 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
अक्टूबर 2020 बहाई वर्ष : 177

असम क्षेत्र की गतिविधियाँ

• असम क्षेत्र में बच्चों की बहाई कक्षा के विचारशील समूह की बैठक के दौरान सलाहकार महोदय के साथ विचार–विमर्श किया गया। जिसमें यह बात उभर कर आई कि इस क्षेत्र में बच्चों की बहाई कक्षाएँ फिर से कैसे शुरू की जाएँ और आज के समय की वास्तविकता को देखते हुए एक परिकल्पना और भविष्य के लिए योजना बनाने में शिक्षकों की सहायता कैसे की जा सकती है। इस उद्देश्य हेतु कॉन्फ्रेंस कॉल के माध्यम से तीन दिनों के एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में इस राज्य से 42 शिक्षकों ने भाग लिया और अन्य राज्यों के कुछ मित्रगण भी इसमें शामिल हुए।

सम्मेलन की तैयारी से अंत तक सलाहकार की सहायता से शिक्षकों के लिए यह मंच तैयार किया गया – सम्मेलन को अधिक सार्थक बनाने हेतु क्षेत्र के लिए एक नया अनुभव था, प्रतिभागियों की सुगमता को ध्यान में रखते हुए सभी भाषाओं में अध्ययन सामग्री तैयार की गई।

कॉन्फ्रेंस कॉल पर आयोजित सेमिनार में यह देखा गया कि कई शिक्षकों को जो सामग्री उपलब्ध कराई गई थी, उसने मित्रों को उनकी चर्चाओं को केंद्र में रखने तथा अधिक विशेष और वास्तविक रूप से योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सम्मेलन के दो भाग थे– 1. अध्ययन और सामग्री की समीक्षा 2. सेमिनार के दौरान प्राप्त अनुभवों के आधार पर गृह–भ्रमण करना। सम्मेलन के दौरान ही शिक्षकों ने अपनी व्यक्तिगत योजना बनाई।

सम्मेलन के बाद पहले से चल रही कक्षाओं को फिर से शुरू करने के लिए विभिन्न गांवों में कई गृह–भ्रमण शुरू हुए और कई नई बच्चों की बहाई कक्षायें शुरू हुईं जो पूरे क्षेत्र को प्रोत्साहित कर रही हैं।

• कोविड–19 महामारी के प्रसार के कारण राष्ट्रव्यापी प्रतिबंध को देखते हुए सलाहकार और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा ने पूरे

शेष पृष्ठ 4 पर



असम में हुए शिक्षकों के सेमिनार के प्रतिभागी

ओडिशा में बच्चों की बहाई कक्षा के लिए सेमिनार का आयोजन

ओडिशा के विचारशील समूह के चार सदस्यों ने सलाहकार के मार्गदर्शन के बाद असम में आयोजित बच्चों की बहाई कक्षा के वर्चुअल सेमिनार में भाग लिया था। उन्होंने इस सेमिनार में सीखा कि इस कठिन समय के दौरान अवसर मिलने पर कैसे नई बच्चों की बहाई कक्षाओं को या पहले से चल रही गतिविधियों को फिर से कैसे शुरू किया जाए। सेमिनार में भाग लेने के बाद, विचारशील समूह ने लगातार मुलाकात की और अपने सलाहकार के परामर्श से सम्मेलन बुलाने पर विचार किया। राज्य बहाई परिषद और प्रशिक्षण संस्थान मण्डल के साथ संयुक्त बैठक में उन्होंने ओडिशा के तीन–पूर्वी, मध्य और पश्चिमी उप–क्षेत्रों में तीन सेमिनार आयोजित करने का निर्णय लिया। प्रतिभागियों की सूची तैयार की गई, समन्वयकों की पहचान की और सेमिनारों की तारीख को अंतिम रूप दिया गया।

इन सेमिनारों के पूरा होने के बाद सभी प्रतिभागियों ने अपनी व्यक्तिगत योजनाएँ तैयार कीं जैसे:–

–बच्चों की बहाई कक्षाओं को फिर से शुरू करें जो महामारी के कारण बंद हो गई हैं या फिर नई कक्षायें कैसे स्थापित करें।

–माता–पिता से नियमित रूप से मिलें और उनके साथ अच्छे संबंध बनायें।

–माता–पिता के साथ रूही पुस्तक 3 से कहानियों, गीतों और कलात्मक प्रस्तुतियों को साझा करें।

–प्रतिभागियों के घरों में भक्तिपरक बैठकें शुरू करें।

–रूही पुस्तक–1 का अध्ययन उन बच्चों के परिवारों के साथ शुरू करें जहां अवसर मिले।



ओडिशा में बहाई कक्षा के बच्चे कार्यक्रम में भाग लेते हुए

कुछ अनुभव साझा किए गए थे, जहां वे बहाई बच्चों की कक्षा में आने के बाद अपने बच्चों के भीतर परिवर्तन देख सकते थे।

एक मित्र ने बताया कि 2002 में जब मैं बच्चों की क्लास ले रहा था, मैं अपने स्कूल गया था जहाँ मैंने अपनी पढ़ाई पूरी की थी और वहाँ एक शिक्षक के रूप में स्वेच्छा से सेवा की थी। उस समय शिक्षकों की संख्या कम थी और उस अवसर को लेते हुए मैं शनिवार को बच्चों की नैतिक कक्षा लेता था, जिसमें मैंने बच्चों को कुछ प्रार्थनाएँ, चित्र, कहानियाँ सिखाईं। उन बच्चों में से कुछ जब भी मिलते हैं तब वे प्रार्थनाएँ, नैतिक बातें याद करते हैं जो उन्होंने बच्चों की कक्षा में सीखे थे। हमारे गाँव में वे बच्चे अलग हैं। वे आध्यात्मिक हैं और गाँव में

शेष पृष्ठ 3 पर

इस अंक में

• असम क्षेत्र की गतिविधियाँ 1
• ओडिशा में बच्चों की बहाई कक्षा के लिए सेमिनार का आयोजन 1
• मध्य प्रदेश में आयोजित कार्यक्रमों की झलक 2
• झारखण्ड में आयोजित गतिविधियाँ 2
• पैठण और शेवगाव क्लस्टर मील के दूसरे पत्थर तक पहुँचे 3
• बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के संबंध में बहाउल्लाह का विधान 4

मध्य प्रदेश में आयोजित कार्यक्रमों की झलक

• स्थानीय बहाई आध्यात्मिक सभा भोपाल व सहायक मंडल सदस्यों के संयुक्त परामर्श उपरांत बहाई भवन इंद्रपुरी में सघन स्टडी सर्कल के कार्यक्रम का आयोजन 16 से 25 सितंबर 2020 तक किया गया। इस कार्यक्रम में इंद्रपुरी के 8 युवाओं ने रूही पुस्तक–3 ग्रेड 1 का अध्ययन पूरा किया। इन 8 युवाओं में 3 अनुप्रेरक हैं और 5 युवा एक किशोर समूह से हैं, जिनकी आयु 15–16 वर्ष की है, जिन्होंने कोरोना काल के तालाबंदी में स्टडी सर्कल के माध्यम से अप्रैल में रुही पुस्तक–1 पूर्ण की थी। मई माह में रूही पुस्तक–2 की इकाई 2 तक का भी अध्ययन पूरा किया।



भोपाल में आयोजित स्टडी सर्कल में भाग लेने वाले युवा

इस समूह के अनुप्रेरक ने इन युवाओं के साथ मिलकर कुछ परिवारों में संविदा, बहाउल्लाह का जीवन और प्रेम–एकता के विषयों पर गृहभ्रमण किया। भ्रमण के दौरान अनुप्रेरक के साथ इन युवाओं का, समुदाय के बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के विषय में परामर्श हुआ। युवाओं ने अपने समुदाय के बच्चों की आध्यत्मिक शिक्षा की जिम्मेदारी लेने के लिए संस्थान की रूही पुस्तक–3 के अध्ययन के लिये योजना बनाई। ट्यूटर के रूप में अपनी सेवाएं देने के लिए दो बहाइयों का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ। रूही पुस्तक–3 के प्रशिक्षण के अंतिम दिन 25 सितम्बर से बच्चों के परिवारों में जाना शुरू किया और 26 सितम्बर को पाठ 1, 2 और 3 के लिए तैयारी की।

27 सितम्बर को समुदाय में बच्चों की 3 कक्षा आरम्भ हो गईं। शेष 3 कक्षाएं भी शीघ्र ही शुरू होंगी।

• मध्य प्रदेश के भोपाल में कोरोना महामारी के चलते लगभग 6 महीने बाद भोपाल के बहाई समुदाय ने बहाई भवन इंद्रपुरी में एकत्रित होकर उन्नीस दिवसीय सहभोज मनाया। सहभोज सभा का आरम्भ समूह प्रार्थनाओं के साथ साथ हुआ। उसके उपरान्त बहाउल्लाह के पवित्र लेखों से विभिन्न मित्रों ने पाठ किया व राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा से प्राप्त उन्नीस दिवसीय सहभोज पत्र को पढ़ा व उस पर परामर्श किया गया। मित्रों ने जाना कि इस विषम परिस्थिति में बहाई समुदाय मानवजाति की सेवा में कैसे अपने आपको संलग्न कर सकता है। कोरोना महामारी से बचाव पर चर्चा के उपरांत विशेष प्रार्थना की गई। इस पूरे कार्यक्रम में कम संख्या में मित्रगण शामिल हुए व मास्क पहने हुए सुरक्षित दूरी का भी ख्याल रखा गया।



बहाई भवन में आयोजित सहभोज सभा में शामिल हुए मित्रगण

झारखण्ड में आयोजित गतिविधियाँ

• झारखण्ड स्थित तामाड़ क्लस्टर के स्थानीय मित्रों संस्थाओं और एजेंसियों एवं भ्रमण दलों की सहायता से यह क्लस्टर तीसरे मील के पत्थर पर पहुँच गया है।



झारखण्ड में आयोजित बच्चों की बहाई कक्षाओं में भाग लेने वाले बालक

अभी वर्तमान में इस क्लस्टर में गतिविधियां क्रमशः बच्चों की बहाई कक्षायें – 9/9/65, किशोर समूह – 7/6/47, स्टडी सर्कल – 2/3/13, भक्तिपरक बैठकें – 110/400 हैं। मुख्य रूप से यह गतिविधियाँ चार समुदायों में संचालित की जा रही हैं, और रुचाप समुदाय इस क्लस्टर का गहन गतिविधियों का केंद्र है, जहाँ लगभग 80 गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं। यहाँ 6 मित्रों का एक दल है जो समय–समय पर मिलकर परामर्श करते हैं और योजना बनाते हुए कार्य करते हैं। इस क्लस्टर की संस्थायें और एजेंसियाँ अब अपने मूल कर्त्तव्य को पहचानने लगी हैं और उसके आधार पर क्लस्टर विकास में अपना योगदान निभाती हैं। इस क्लस्टर की पहचान मई 2015 में हुई थी और 2017 में द्वि–शताब्दी के समय इस क्लस्टर ने प्रथम मील के पत्थर को प्राप्त किया था और तुरंत एक वर्ष बाद 2018 में इसने दूसरे मिल के पत्थर को प्राप्त किया। इसका कारण द्वि–शताब्दी का प्रभाव था और अब यह तीसरे मिल के पत्थर पर है। इस क्लस्टर ने संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों वृद्धि प्राप्त की हैं। अभी यहाँ लगभग 45 बहाई निवास कर रहे हैं, जो सक्रिय हैं। मित्रों द्वारा किये जाने वाले कार्यों को समुदाय का सहयोग पूरा मिलता है, क्योंकि वे जानते हैं कि यह कार्यक्रम हमारे परिवार और समुदाय को आध्यात्मिक और भौतिक दोनों रूप से ससक्त बनाता है।



झारखण्ड में आयोजित की जाने वाली प्रार्थना सभा

• एक ओर जहाँ महामारी ने राज्य में संचालित अधिकतर गतिविधियों पर प्रभाव डाला, जिससे कई गतिविधियां बंद हो गयी थीं। परंतु जैसे–जैसे परिस्थितियाँ अनुकूल हो रही हैं वैसे–वैसे बंद पड़ी गतिविधियाँ भी अपना स्वरूप ले रही हैं। एक दृष्टि से अगर

शेष →

पैठण और शेवगाव क्लस्टर मील के दूसरे पत्थर तक पहुंचे

महाराष्ट्र के नासिक से एक दल पडोसी समुदाय में भ्रमण के लिए गया, जिनकी योजना पैठण और शेवगाव डेल्टा क्लस्टर्स को मील के दूसरे पत्थर तक पहुंचाना थी।

यह दल देवलाली से निकला जिसमें एक इकाई संयोजक, क्लस्टर विकास संयोजक और एक सहायक मंडल सदस्य थे।

तीनों मित्रों ने एक निजी डॉक्टर द्वारा अपना परीक्षण कराया और स्वास्थ्य प्रमाणपत्र लिया। उस के साथ–साथ सुरक्षित प्रवास के लिए महाराष्ट्र पुलिस के ओर से ई–पास भी बनवा लिया।

इन तीन मित्रों ने दस दिनों में पैठण जो औरंगाबाद जिले का तालुका है उसे कार्यक्रम शुरू करने से लेकर मिल के दूसरे पत्थर तक पहुंचाया और शेवगाव जो अहमदनगर का डेल्टा क्लस्टर था उसको मिल के दूसरे पत्थर तक ले गये।

मित्रों ने वहां के सरपंचों से मुलाकात की और अभियानों के अंतर्गत इन समुदायों को आगे लेकर गए दोनों समुदायों में 60 से ज्यादा गतिविधियाँ शुरू हुई।

जब मित्र पैठण से नासिक को लौटे एक उत्साह बढ़ाने वाली घटना घटी। जैसे ही मित्रगण देवलाली पहुंचे वहां पर स्थानीय आध्यात्मिक सभा देवलाली और मुहल्ला धोंडी रोड के समुदाय ने स्वागत किया और पैठण के मील के दूसरे पत्थर पर पहुंचने पर शुभ कामनाएं दीं। इस घटना ने मित्रों को काफी प्रोत्साहित किया।



नासिक के मित्रों का स्वागत करते हुए देवलाली और मुहल्ला धोंडी रोड के मित्रगण

देखते हैं तो हम पाते हैं कि महामारी के कारण उत्पन्न परिस्थितियों ने हमें दूर–दराज में रह रहे मित्रों से बातचीत और दोबारा पवित्र लेखनी को साथ पढ़ने का अवसर उपलब्ध कराया। जो हमसे दूर हो चुके थे। दूसरी बात यह की हमने जाना की आधुनिक युग में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की जानकारी होना अत्यंत ही आवश्यक है और वास्तव में कई ऐसे मित्र हैं जो अपने अनुभव में साझा करते हैं कि इस माध्यम ने उन्हें बहुत कुछ सिखाया है। प्रत्येक क्लस्टर की संस्थाएँ और एजेंसियाँ यह प्रयास कर रही हैं कि कैसे अब पुनः वह माहौल तैयार किया जाये जहाँ पुनः बच्चे, किशोर, युवा, वयस्क बहाउल्लाह के महासागर की अतल गहराइयों से बहुमूल्य रत्नों को खोजने का प्रयास करें। फिर से वह लहर लाई जाये जिसमें प्रत्येक घर ईश्वरीय प्रेम के फैलाव का केंद्र बन सके। आसनबनी, पटमदा, जमशेदपुर की स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं ने समुदाय में प्रभावित परिवारों को मदद करने हेतु अपने कोष को खोल दिया। कई शिक्षक, अनुप्रेरक, सह–शिक्षक ने अपनी क्षमताओं को और अधिक बढ़ाया है क्योंकि उन्होंने महामारी से जाना की समय रहते प्रत्येक हृदय में ईश्वरीय प्रेम का बीज बोना अनिवार्य है क्योंकि यही वह औषधि है जो प्रत्येक समय हमें सबल बनाती है और संकट से लड़ने में मदद करती है।

ओडिशा में बच्चों की बहाई कक्षा के लिए सेमिनार का आयोजन

पृष्ठ 1 का शेष

किसी भी तरह की शरारत में शामिल नहीं हैं।

एक अन्य मित्र ने बताया कि 2003 में बच्चों का नैतिक वर्ग था। उस समय कोई किशोर कार्यक्रम विकसित नहीं किया गया था, इसलिए बच्चों की कक्षा पूरी होने के बाद बच्चों के साथ ज्यादा संपर्क में नहीं थे। कई सालों के बाद, हम उन बच्चों में से एक लड़की से मिले जिन्होंने बच्चों की बहाई कक्षा में हिस्सा लिया था। उसे बैंक में नौकरी मिल गई थी। बैंक में हमने देखा कि पैसा जमा करने के लिए लंबी कतार थी। कैशियर लोगों को फ़ॉर्म भरने में किसी भी प्रकार की मदद नहीं कर रहा था। एक बूढ़ा व्यक्ति वहां गया जो लिखना नहीं जानता, जब उसने अन्य बैंक कर्मचारियों से सहायता मांगी, तो सभी ने मदद करने से इंकार कर दिया क्योंकि उन्होंने कहा कि वे अपने काम में व्यस्त हैं। अधिकांश कर्मचारियों ने उनसे कहा कि वे फॉर्म भरने में जनता की मदद लें। लेकिन उस लड़की ने बूढ़े व्यक्ति के लिए जल्दी से फार्म भर दिया और फॉर्म पूरा करने में सहायता की। जब मेरी बारी आई तो मैंने उस लड़की से पूछा कि कैसे औरों ने मना किया और आपने फॉर्म लिया और उसकी मदद की? क्या आपको अपनी नौकरी खोने का डर नहीं है? तब मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उस लड़की ने कहा कि जब मैं एक बच्ची थी तब बच्चों की नैतिक कक्षा में जाती थी और उसमें मुझे दूसरों की मदद करना सिखाया जाता था और अब मैं उस गुण को प्रदर्शित करने की कोशिश कर रही हूं।

मित्रों ने कुछ ऐसे विषय पर चर्चा की जिन पर माता–पिता के साथ सार्थक बातचीत कर सकते हैं जब उनसे मिलते हैं, जैसे–

- प्रार्थना



ओडिशा में आयोजित की जाने वाली बहाई कक्षाओं के बच्चे

- आध्यात्मिक और भौतिक शिक्षा के बीच सामंजस्य
- एक बच्चे की छिपी हुई प्रतिभा और क्षमता
- स्वच्छता
- इतिहास के बारे में– जीत और संकट की अवधारणा
- बच्चे ईश्वर का प्यार और डर कैसे पैदा कर सकते हैं
- परिवार के स्तर पर परामर्श
- दो गुना नैतिक उद्देश्य
- सामूहिक उपासना की संस्कृति बनाना

इसके अलावा कुछ प्रश्न पूछे गए और उन पर चर्चा की गई।

निवेदन

प्रिय मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें बहाई समाचार में प्रकाशित कर सकें।

धन्यवाद !

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
New Delhi P.S.O. Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20

बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के संबंध में बहाउल्लाह का विधान

बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के विधानों का सिंहावलोकन और इनकी उपयुक्तता

क़िब्ला की ओर मुँह कर शरीर को भूमिगत करना

मृतकों को इस प्रकार भूमिगत किया जाना चाहिये कि उनके चेहरे क़िब्ला की ओर हो।

(शोगी एफेंदी की ओर से एक अनुयायी को 6 जुलाई 1935 को लिखे गये पत्र से)

समाधि में शरीर को कुछ इस प्रकार भूमिगत किया जाये कि उनके पाँव क़िब्ला की ओर हों, जो अक्का में बहजी है।

(विश्व न्याय मंदिर द्वारा एक अनुयायी को 4 मई 1972 को लिखे गये पत्र से)

हालाँकि यह बाध्यकारी अपेक्षा फिलहाल नहीं है, किन्तु अन्ततः, सभी देशों में बहाइयों के मृत शरीर को क़िब्ला की ओर मुख कर भूमिगत किया जायेगा ताकि पाँव बहजी की ओर हों।

(विश्व न्याय मंदिर की ओर से एक अनुयायी को 13 सितम्बर 1992 को लिखे गये पत्र से)

जहाँ तक बहाई अत्येष्टि का प्रश्न है, शरीर को कुछ इस तरह भूमिगत करना चाहिये कि पाँव क़िब्ले की दिशा में हों (अक्का स्थित बहाउल्लाह की समाधि), विश्वव्यापी रूप से बाध्यकारी फिलहाल नहीं है। अगर किसी के शरीर को किसी अन्य दिशा में भूमिगत किया जाये तो किसी प्रकार की कार्रवाई इसके लिए नहीं होनी चाहिये।

(विश्व न्याय मंदिर द्वारा एक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को 26 फरवरी 2006 को लिखे गये पत्र से)

सम्बन्धित विषय

बहाई विधान के विपरीत अंत्येष्टि–क्रिया अथवा मृतक के सम्बन्धियों द्वारा बहाई विधान का विरोध किया जाना

अंत्येष्टि से सम्बन्धित बहाई विधान का अनुपालन शिक्षा का विषय है। ...अगर कोई बहाई मौखिक अथवा लिखित रूप से यह व्यवस्था करता है जो बहाई विधान के विपरीत है तो बहाई विधान के अनुसार उसे निरस्त माना जाना चाहिये और न तो बहाई सम्बन्धी अथवा स्थानीय आध्यात्मिक सभा को अनुमति है कि उस व्यवस्था को स्वीकारे। अगर कोई बहाई यह लिखता अथवा कहता है कि उसके पार्थिव शरीर का दाह–संस्कार किया जाना चाहिये, जब तक कोई ऐसा नागरिक कानून न हो जो ऐसा करने की मनाही करता हो, ऐसी स्थिति में नागरिक कानून का अनुसरण किया जाना चाहिए, लेकिन आध्यात्मिक सभा, जैसा कि पहले भी कहा गया है, इस दाह–संस्कार का हिस्सा नहीं बनेगी। बहाइयों का ऐसे दाह–संस्कार में शामिल होना मना नहीं है, अगर मृतक के सम्बन्धियों ने बहाई विधान के अनुपालन से रोका है। अगर परिस्थितियां अनुकूल हों तो अपने मृत मित्र की आत्मा की प्रगति के लिये बहाइयों को प्रार्थना करनी चाहिये, अगर यह सम्भव न हो तब आध्यात्मिक सभा को दाह–संस्कार के बाद एक सभा का आयोजन करना चाहिये, अगर उचित समझा जाये, और मृतक की ओर से प्रार्थना, जिसमें दिवंगतों के लिये प्रार्थना भी शामिल हो, की जानी चाहिये।

(विश्व न्याय मंदिर की ओर से एक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को 3 जुलाई 1986 को लिखे गये पत्र से)

क्रमशः

असम क्षेत्र की गतिविधियाँ

पृष्ठ 1 का शेष

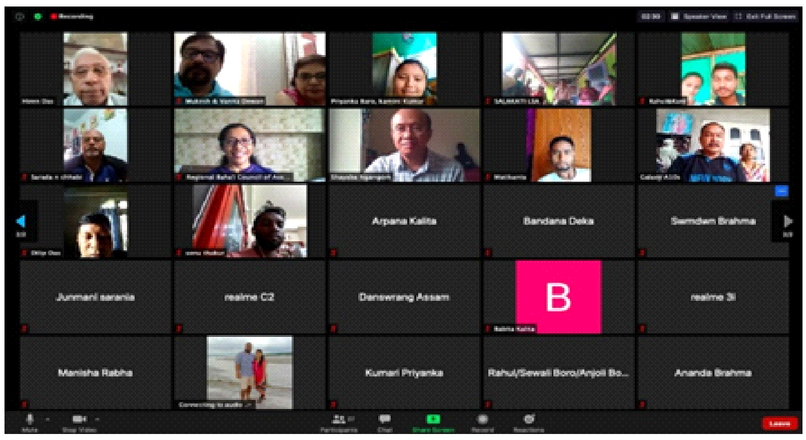
देश में स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं को मजबूत करने में परिषदों को मार्गदर्शन और सहायता प्रदान की है। प्रत्येक दो सप्ताह में एक बार वे इस विषय पर सभी परिषदों के सचिवों से परामर्श करते हैं। इस परामर्श से परिषद को नए विचार मिलते हैं और स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के साथ काम करने की जानकारी प्राप्त होती है। वे इन बैठकों में आने वाले बिंदुओं पर परामर्श करते हैं और रणनीति बनाते हैं।

स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं को मजबूत करने की प्रक्रिया में असम परिषद ने कदम उठाए हैं और स्थानीय आध्यात्मिक सभा का मूल्यांकन तैयार किया है जो सभी स्थानीय सभाओं की निरंतरता को प्रगति की रेखा पर दिखाता है। इससे स्पष्ट पता चलता है कि किस स्थानीय सभा को किस सहायता की आवश्यकता है। कई स्थानीय सभा सदस्यों ने विश्व न्याय मंदिर के संदेशों का अध्ययन किया, ताकि इस संकट के समय में काम करने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त हो सके।

स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों ने एक निर्देशिका भी तैयार की है, जिसमें ऐसे लोगों के नाम, पते और नंबर हैं, जिन्होंने रुही पुस्तकें पूरी की हैं, ताकि संचार के लिए यह आसान हो जाए और यह भी जांच सकें कि प्रत्येक सदस्य ने कितनी रुही पुस्तकें पूरी की हैं। ऐसे लोगों को आगे की पुस्तकों तक ले जाने की योजना बना सकते हैं।

दो स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं–सलाकाटी और नोकाटा की पहचान उनके एक या दो इलाकों में भक्तिपरक बैठकों स्थापित करने के लिए की गई थी। सालकटी सभा ने पहले ही योजना बना ली है और इस पर काम करना शुरू कर दिया है।

30 अगस्त 2020 को स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों के लिए एक बैठक हुई, जिसमें दस सभाओं में से पचपन सदस्य थे जो इस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में शामिल हुए। विश्व न्याय मन्दिर के 28 दिसंबर 2010 के संदेश पर आधारित एक सामग्री तैयार की गई थी। इस सामग्री के माध्यम से सदस्यों ने विशेष रूप से इस संकट के दौरान अपने कार्य और जिम्मेदारियों पर परामर्श किया और आगे के महीनों के लिए अपने कार्य की रूपरेखा तैयार की।



असम में स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के विकास के लिए आयोजित बैठक में भाग लेने वाले मित्रगण

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.10. 2020
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)